Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

Original Article

# राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विशेष संदर्भ मे, अरविंद घोष के सर्वांग शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता

**डॉ. देश दीपक वर्मा**
सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग, शक्ति स्मारक संस्थान दुल्हिनपुर,
बलरामपुर (उत्तर प्रदेश)
**Email** - vermadeshsss@gmail.com

**Manuscript ID**:
JRD -2026-180411
ISSN: 2230-9578

Volume 18
Issue 4(A)
Pp 48-53
April- 2026
**Submitted:** 23 Mar. 2026
**Revised:** 30 Mar. 2026
**Accepted:** 14 Apr. 2026
**Published:** 30 April. 2026

## सारांश

भारतीय शिक्षा परंपरा में अरविंद घोष का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न मानकर व्यक्ति के समग्र विकास का साधन माना। उनका "सर्वांग शिक्षा दर्शन" *(Integral Education)* मानव के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास पर आधारित है। आज के वैश्विक और प्रतिस्पर्धात्मक युग में, जब शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार तक सीमित होता जा रहा है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति *2020* इस सोच को बदलते हुए समग्र शिक्षा पर बल देती है। इस संदर्भ में अरविंद घोष का शिक्षा दर्शन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। अरविंद घोष का **सर्वांग शिक्षा दर्शन** (*Integral Education)* आधुनिक शिक्षा की उन अवधारणाओं में से है, जो मानव के समग्र विकास पर बल देता है। यह दर्शन आज के राष्ट्रीय शिक्षा नीति *2020* के संदर्भ में , विशेष रूप से प्रासंगिक हो गया है। कोलकाता में सन *1872* ई*0* में एक सुशिक्षित परिवार में जन्म लेने वाले श्री अरविंद घोष ने *14* वर्ष की आयु में इंग्लैंड की संस्कृति एवं रचनाकारों को जानने के लिए फ्रेंच, जर्मन, ग्रीक एवं लैटिन भाषा का अध्ययन किया। एक आदर्शवादी होने के साथ वे एक दूरदर्शी शिक्षाशास्त्री थे, जिनका मानवीय विकास में ही पूर्ण विश्वास रहा। श्री अरविंद यह मानते हैं कि जब मनुष्य ईश्वर में पूर्णता लीन हो जाता है तब उसकी समग्र जीवन दृष्टि विकसित होती है ईश्वर में लीन हो जाने वाले मनुष्य मानव से अतिमानव (*superman)* तथा उसका मन साधारण 'मानस' से 'अतिमानस' बन जाता है। श्री अरविंद जी का मानना था कि जीव की आत्मा में ज्ञान सदा सोने की अवस्था में दिखाई नहीं देता है। शिक्षा का आधार अंत.करण है इसका मानना है की सच्ची और वास्तविक शिक्षा वह है जो मानव के अंदर छुपी हुई शक्ति को विकसित करती है। वह उससे पूर्ण रूप से प्रभावित होता है अंत.करण के चार मुख्य अंग है जो इस प्रकार है। - चित्त , बुद्धि, मानस और ज्ञान । उनके अनुसार मानव की इन शक्तियों में विकास होता है। अतः शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि वह इन शक्तियों को विकसित कर सके केवल ज्ञान प्राप्त करना ही शिक्षा नहीं है सच्ची शिक्षा वही है जिसमें मानव का पूर्ण विकास करने की क्षमता हो। अरविंद जी के शिक्षा का एक अहम हिस्सा ज्ञानेंद्रिय का प्रशिक्षण भी बताया गया है। उनका विकास तथा दृष्टि ,श्रवण ,घ्राण , स्पर्श और स्वाद पांच ज्ञानेंद्रियों का ज्ञान व विकास तभी हो सकता है जब स्नायु , चिंता तथा मन शुद्ध हो। अतः अरविंद घोष जी के सर्वांग शिक्षा दर्शन के बहुमूल्य विचारों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मे क्रियान्वित करके एक आदर्श समाज एवं देश का निर्माण किया जा सकता है ।

**मुख्य शब्द**: शिक्षा व्यवस्था , आध्यात्मिकता, अतिमानस, अतिमानव, शिक्षा, वर्तमान स्थिति, श्री अरविंद घोष की शिक्षा, विचारधारा और जीवनदृष्टि ।

## प्रस्तावना

शिक्षा केवल सूचनाओं का हस्तांतरण नहीं, बल्कि एक सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। एक सदी पूर्व महर्षि अरविंद घोष ने "सर्वांग योग" और "समग्र शिक्षा" के जिस दर्शन की नींव रखी, वह आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से व्यावहारिक रूप ले रहा है। यह नीति केवल नवाचार का दस्तावेज नहीं, बल्कि शिक्षा को भारतीय विचारधारा और चरित्र निर्माण की आधारशिला पर पुनर्स्थापित करने का प्रयास है, कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, महर्षि अरविंद घोष के सर्वांग शिक्षा दर्शन को 21वीं सदी के संदर्भ में एक राष्ट्रीय शैक्षिक ढाँचे का स्वरूप प्रदान करती है।

***Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)***
*This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.*

**Address for correspondence:**
*डॉ. देश दीपक वर्मा, सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग, शक्ति स्मारक संस्थान दुल्हिनपुर, बलरामपुर (उत्तर प्रदेश)*

**How to cite this article:**
*वर्मा, देश. दीपक. (2026). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विशेष संदर्भ मे, अरविंद घोष के सर्वांग शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता. Journal of research & development, 18(4(A)), 48–53. https://doi.org/10.5281/zenodo.20377119*

Quick Response Code:
Website:
https://jrdrvb.org/
DOI:
10.5281/zenodo.20377119
OPEN ACCESS

जहाँ अरविंद ने दार्शनिक आधार दिया, वहीं NEP उसे क्रियान्वयन की रणनीति, संरचना और नीति के स्तर पर उतारती है। यह समग्र शिक्षा की परिकल्पना को साकार करने का एक सुनियोजित प्रयास है, जो भारत को केवल एक आर्थिक महाशक्ति ही नहीं, बल्कि एक "जीवंत और न्यायसंगत ज्ञान समाज" बनाने की राह पर ले जाती है। इस अर्थ में, NEP 2020 सिर्फ एक नीति दस्तावेज न रहकर, अरविंद घोष के शैक्षिक स्वप्नों का एक सार्थक और प्रासंगिक अवतार बन जाती है, जो आने वाली पीढ़ी को न केवल कुशल, बल्कि संवेदनशील, नैतिक और चरित्रवान नागरिक बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। महर्षि अरविंद घोष की शिक्षण-दृष्टि संकीर्ण नहीं, बल्कि समष्टिगत थी। उनके अनुसार, वास्तविक शिक्षा वह है जो बालक के शरीर, मन, बुद्धि, हृदय और आत्मा—इन पांच तलों का समन्वित विकास करे। शिक्षा का अंतिम लक्ष्य केवल नौकरी पाना नहीं, बल्कि एक "समग्र मानव" का निर्माण करना है, जो अपनी आंतरिक क्षमताओं को जानकर विश्व कल्याण के पथ पर चल सके।

**इस दर्शन के मुख्य स्तंभ हैं:**

सर्वांग विकास: शिक्षा शारीरिक, बौद्धिक, सौंदर्यबोध, नैतिक और आध्यात्मिक विकास का समावेशी मिश्रण हो।

केंद्र में बालक: बालक एक सक्रिय सर्जक है, न कि ज्ञान का निष्क्रिय ग्रहणकर्ता। शिक्षा को उसकी आंतरिक प्रकृति और रुचियों से संवाद करना चाहिए।

**जीवन के साथ एकीकरण**: शिक्षा जीवन से पृथक नहीं हो सकती। उनका मानना था कि "शिक्षा का लक्ष्य जीवन के लक्ष्य से भिन्न नहीं हो सकता"।

**मूल्य-आधारित शिक्षा**: अनुशासन, संयम, सहयोग, आत्मानुशासन और नैतिक मूल्य शिक्षा का अभिन्न अंग हैं।

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: अरविंद दर्शन का प्रतिबिंब**

NEP 2020 अरविंद के सर्वांग दर्शन को एक आधुनिक शिक्षा प्रणाली के ढांचे में ढालती प्रतीत होती है। इसकी प्रमुख विशेषताएं इस साम्य को उजागर करती हैं:

1. **समग्र विकास पर बल:**

NEP शिक्षा का उद्देश्य "ज्ञान, कौशल, मूल्य और नैतिकता के साथ सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास" बताती है। यह बिल्कुल अरविंद के पंचकोणीय विकास (ज्ञान, शक्ति, सद्भाव, सौंदर्यबोध और समर्पण) के सिद्धांत के अनुरूप है।

**2. पाठ्यचर्या का विस्तार और लचीलापन:**

बहुविषयकता: विज्ञान, कला, व्यावसायिक शिक्षा के बीच कठोर विभाजन को समाप्त करना NEP का मूल मंत्र है। अरविंद भी मानते थे कि शिक्षा जीवन के सभी पक्षों को समेटे।

**3. मूल्य एवं नैतिक शिक्षा का समावेश:** NEP नैतिक मूल्यों, नागरिक कर्तव्यों, सहिष्णुता और मानवीय संवेदना को पाठ्यक्रम का केंद्र बनाती है। यह अरविंद के चरित्र निर्माण और आंतरिक अनुशासन पर दिए गए बल को प्रतिध्वनित करता है।

**4. समावेशी और बाल-केंद्रित शिक्षा:**

NEP सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर जोर देती है, चाहे वह सामाजिक, आर्थिक या शैक्षणिक रूप से पिछड़ा वर्ग हो। यह समावेशिता अरविंद के "विश्व कल्याण" के दर्शन से मेल खाती है। खोज-आधारित एवं रुचि-अनुसार शिक्षण: NEP की रटंत प्रणाली से मुक्ति और अनुभवात्मक शिक्षण पर जोर, अरविंद के बालक को सक्रिय सर्जक मानने के सिद्धांत को साकार करता है।

**5. भारतीय ज्ञान परंपरा और दर्शन का सम्मान:** NEP 2020 अपने मूल में "भारतीयता और भारतीय मूल्यों" को पुनर्स्थापित करने का प्रयास है। यह अरविंद के उस विचार का साकार रूप है कि शिक्षा भारतीय सभ्यता और आध्यात्मिक चेतना से जुड़ी होनी चाहिए, न कि केवल पश्चिमी मॉडल की नकल।

**अध्ययन का उद्देश्य**

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अरविंद घोष के शैक्षिक सिद्धांतों का वर्तमान शिक्षा में क्या योगदान रहा है, यह देखना है। महान दार्शनिक विचारों और दार्शनिकों के मालिक अरविंद घोष थे वर्षों पहले दिया गया उनका ज्ञान आज की शिक्षा पर काफी प्रभाव डालता है। साहित्य और शैक्षिक विचार इसका मुख्य आधार हैं। अरविंद जी के बहुत से विचार आज की शिक्षा व्यवस्था से मेल खाते हैं। उनके विचार शिक्षा को सरल बना सकते हैं। यह अध्ययन आज की शिक्षा व्यवस्था को सरल और बेहतर बनाने के लिए अरविंद जी की शिक्षा दर्शन की आवश्यकता का विश्लेषण करता है। अरविंद घोष के शैक्षिक सिद्धांतों के अध्ययन के बिन्दुवार उद्देश्य निमन्वत है --

**प्रमुख उद्देश्य (Main Objectives)**

1. **Sri Aurobindo के सर्वांग शिक्षा दर्शन का अध्ययन करना**
   उनके शिक्षा संबंधी विचारों—शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, आत्मिक एवं आध्यात्मिक विकास—का विश्लेषण करना।
2. **National Education Policy 2020 के प्रमुख सिद्धांतों का विश्लेषण करना**
   जैसे—समग्र विकास, बहुविषयक शिक्षा, लचीली शिक्षा प्रणाली, और मूल्यपरक शिक्षा।
3. **सर्वांग शिक्षा दर्शन और NEP 2020 के बीच समानताओं का अध्ययन करना**
   यह जानना कि दोनों में समग्र विकास, छात्र-केंद्रितता और अनुभवात्मक अधिगम जैसे तत्व किस प्रकार समान हैं।
4. **दोनों के बीच अंतर एवं सीमाओं की पहचान करना**
   विशेष रूप से आध्यात्मिक एवं आंतरिक चेतना के संदर्भ में अंतर का विश्लेषण करना।
5. **NEP 2020 में सर्वांग शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना**
   यह समझना कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अरविंद घोष के विचार कितने उपयोगी और लागू हैं।
6. **शिक्षक शिक्षा में सर्वांग शिक्षा दर्शन के समावेशन का अध्ययन करना**
   यह जानना कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इन सिद्धांतों को कैसे शामिल किया जा सकता है।
7. **व्यावहारिक स्तर पर अनुप्रयोग की संभावनाओं का विश्लेषण करना**
   विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में इन सिद्धांतों को लागू करने के उपायों का अध्ययन।
8. **शिक्षा की गुणवत्ता सुधार में सर्वांग शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना**
   यह जानना कि यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों के समग्र विकास में कैसे सहायक हो सकता है।

**अरविंद घोष का सर्वांग शिक्षा दर्शन**

अरविंद घोष के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के भीतर निहित दिव्य शक्तियों का विकास करना है। उनका मानना था कि प्रत्येक बालक में अपार संभावनाएं होती हैं, जिन्हें शिक्षा के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए। अरविंद घोष के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति के **शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास** का संतुलित समन्वय है।
उन्होंने शिक्षा के पाँच आयाम बताए:
उनके शिक्षा दर्शन के प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं—

1. **शारीरिक विकास** – स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।
2. **प्राणिक (भावनात्मक) विकास** – आत्मसंयम, अनुशासन और नैतिकता का विकास।
3. **मानसिक विकास** – तार्किकता, चिंतन और विश्लेषण क्षमता का विकास।
4. **बौद्धिक विकास** – ज्ञान, विवेक और सृजनात्मकता का विकास।
5. **आध्यात्मिक विकास** – आत्मबोध और आत्म-साक्षात्कार की प्राप्ति।

अरविंद घोष ने शिक्षक को “मार्गदर्शक” और विद्यार्थी को “स्व-शिक्षार्थी” के रूप में देखा। उन्होंने शिक्षा को स्वाभाविक, स्वतंत्र और बालक-केंद्रित बनाने पर बल दिया। व्यक्ति अपने जीवन दर्शन से दूसरे व्यक्तियों को प्रभावित करता है स्वामी विवेकानंद के समान ही अरविंद घोष जी ने अपने विचार दर्शन व शैक्षिक विचारों को व्यक्ति के जीवन में दर्शाया है।

**साहित्य की समीक्षा**

अनेक शोध (जैसे Dubey, 2025; Singh & Saxena, 2024) यह बताते हैं कि अरविंद घोष ने शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं माना, बल्कि उन्होंने शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, आत्मिक एवं आध्यात्मिक विकास को शिक्षा का लक्ष्य बताया ।उनके अनुसार शिक्षा “सूचना नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का रूपांतरण” है । उन्होंने शिक्षा के पाँच आयाम बताए: शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक। यह दृष्टिकोण आधुनिक “Holistic Education” की आधारशिला माना जाता है।

NEP 2020 पर आधारित साहित्य (Kisku, 2023 ; Zaki, 2022 आदि) यह दर्शाता है कि नीति का मुख्य उद्देश्य समग्र, समावेशी और लचीली शिक्षा प्रणाली का निर्माण है ।

रंजीत सिंह(2018) ने 'राजा राममोहन राय एवं श्री अरविंद घोष के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान शिक्षा में उसकी उपयोगिता' नामक अध्ययन में पाया की-

1. शिक्षार्थी को कुछ भी अलग से सिखा नहीं सकतें है।प्रत्येक विद्यार्थी स्वयं एक अन्वेषक व विचारकर्ता होता है।

3. प्रत्येक विद्यार्थी साहसी तथा वीरता युक्त कार्यों को करने के लिए लालायित रहता है उसकी इस अभिलाषा तथा रुचि की रक्षा, शिक्षा-पद्धति के माध्यम से अवश्य ही होनी चाहिए।

4. विद्यार्थी को अपने शारीरिक तथा मानसिक विकास हेतु जागरूक होना चाहिए इसके लिए योग आवश्यक है। शिक्षक ज्ञान देयक न होकर मार्गदर्शक होता है जो एक आदर्श मनुष्य के रूप में विद्यार्थी के मस्तिष्क पटल पर मुद्रित हो जाता है। विद्यालय साधना केंद्र एवं संस्कृति के संरक्षक हैं।

प्रेम कुमारी मिश्रा (2016 ) 'पांडिचेरी के विशेष संदर्भ में महर्षि अरविंद घोष के शैक्षिक योगदान का अध्ययन'में पाया कि पांडिचेरी में महर्षि अरविंद द्वारा वैदिक शिक्षा केंद्र स्थापित किया गया जिसमें वेद व गीता आदि धार्मिक ग्रंथों की शिक्षा दी जाती थी। जो भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं साहित्य का संरक्षक है। जिसमे मुख्य बिंदु थे संज्ञानात्मक + सामाजिक + भावनात्मक विकास पर बल , बहुविषयक और अनुभवात्मक अधिगम , मातृभाषा आधारित शिक्षा , नैतिक एवं मूल्य आधारित शिक्षा आदि ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख उद्देश्य निमन्वत है

- **समग्र एवं बहुआयामी शिक्षा (Holistic Education)**
- **रचनात्मकता एवं आलोचनात्मक चिंतन का विकास**
- **व्यक्तिगत शिक्षण (Personalized Learning)**
- **नैतिक एवं मूल्यआधारित शिक्षा-**
- **भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनरुत्थान**

सर्वांग शिक्षा दर्शन की NEP 2020 में प्रासंगिकता

**1. समग्र विकास की अवधारणा**

NEP 2020 शिक्षा को केवल अकादमिक उपलब्धि तक सीमित नहीं रखती, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। यह विचार सीधे अरविंद घोष के सर्वांग शिक्षा दर्शन से मेल खाता है। अरविंद घोष का दर्शन व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास पर आधारित है। NEP 2020 भी "**Holistic Development**" को शिक्षा का केंद्र बनाती है। दोनों का लक्ष्य है – केवल परीक्षा आधारित नहीं, बल्कि जीवन-आधारित शिक्षा।

**बालक-केंद्रित शिक्षा**

अरविंद घोष ने बालक की रुचियों और क्षमताओं के अनुसार शिक्षा देने पर जोर दिया। NEP 2020 भी लचीले पाठ्यक्रम और व्यक्तिगत शिक्षण (Personalized Learning) को बढ़ावा देती है। अरविंद घोष ने शिक्षा को बालक की प्रकृति और रुचि के अनुसार बनाने पर जोर दिया।NEP 2020 में भी **Flexible Curriculum** और **Student-Centric Approach** को अपनाया गया है।

**अनुभवात्मक एवं कौशल-आधारित अधिगम**

NEP 2020 में "Learning by Doing" और कौशल विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है, जो अरविंद घोष के व्यावहारिक और अनुभवात्मक शिक्षा सिद्धांत से मेल खाता है। अरविंद घोष ने "Learning by Doing" पर बल दिया। NEP 2020 में **Experiential Learning**, **Activity-based Learning**, और **Skill-based Education** को प्राथमिकता दी गई है।

**2. नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा**

अरविंद घोष ने शिक्षा में आध्यात्मिकता और नैतिक मूल्यों को अनिवार्य माना। NEP 2020 भी मूल्यपरक शिक्षा और नैतिक विकास को महत्व देती है। सर्वांग शिक्षा में नैतिकता और आध्यात्मिकता का विशेष महत्व है।

NEP 2020 में **Value-based Education**, **Ethics**, और **Indian Knowledge System** को बढ़ावा दिया गया है।

**3. शिक्षक की भूमिका**

NEP 2020 में शिक्षक को "Facilitator" के रूप में देखा गया है, जो अरविंद घोष की अवधारणा के अनुरूप है। अरविंद घोष के अनुसार शिक्षक "मार्गदर्शक (Guide)" होता है। NEP 2020 में भी शिक्षक को "Facilitator" की भूमिका दी गई है, न कि केवल ज्ञान देने वाला।

**4. बहुविषयक शिक्षा**

अरविंद घोष ने ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के समन्वय पर बल दिया। NEP 2020 भी बहुविषयक (Multidisciplinary) शिक्षा को बढ़ावा देती है। सर्वांग शिक्षा विभिन्न विषयों के समन्वय को प्रोत्साहित करती है। NEP 2020 में **Multidisciplinary Education System** (जैसे BA, BSc, BCom के बीच लचीलापन) लागू किया गया है।

### शिक्षा के अन्य पक्षः-

शिक्षा के अन्य हिस्सों में शामिल हैं समाजिक शिक्षा, महिला शिक्षा और चरित्र निर्माण, जो आज की आवश्यकताओं के अनुसार महत्वपूर्ण हैं। शिक्षा देश की तरक्की का एकमात्र साधन है। इनका इसे बढाने में बहुत बड़ा योगदान है। अरविंद जी धर्म और नैतिकता में बहुत दिलचस्पी रखते थे। उनका विचार था कि धर्म के बिना कोई व्यक्ति आत्मिक स्वरूप को नहीं जान सकता। अरविंद ने व्यवसाहिक शिक्षा का समर्थन किया। अरविंद जी के विचारों से आज की शिक्षा में जो कमियां हैं, उनको दूर करने का प्रयास किया जा सकता है।

### वर्तमान समय में प्रासंगिकता

भारतीय शिक्षा परंपरा में अरविंद घोष का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न मानकर व्यक्ति के समग्र विकास का साधन माना। उनका "सर्वांग शिक्षा दर्शन" (Integral Education) मानव के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास पर आधारित है। आज के वैश्विक और प्रतिस्पर्धात्मक युग में, जब शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार तक सीमित होता जा रहा है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस सोच को बदलते हुए समग्र शिक्षा पर बल देती है। इस संदर्भ में अरविंद घोष का शिक्षा दर्शन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। कहा जा सकता है कि अरविंद घोष का सर्वांग शिक्षा दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दर्शन को आधुनिक संदर्भ में लागू करने का एक प्रयास है। यदि शिक्षा प्रणाली में इस समग्र दृष्टिकोण को अपनाया जाए, तो यह न केवल ज्ञानवान बल्कि नैतिक, सृजनशील और आत्मनिर्भर नागरिकों का निर्माण कर सकती है।

आज के युग में जहाँ शिक्षा अक्सर परीक्षा और रोजगार तक सीमित हो जाती है, वहाँ सर्वांग शिक्षा:

- **व्यक्तित्व विकास** को बढ़ावा देती है
- **मानसिक स्वास्थ्य** और संतुलन पर बल देती है
- **नैतिक मूल्यों** को मजबूत करती है
- **आत्मनिर्भरता और सृजनात्मकता** को विकसित करती है

यही सभी पहलू NEP 2020 के मूल उद्देश्यों से मेल खाते हैं।

### समालोचनात्मक दृष्टिकोण

यद्यपि NEP 2020 में अरविंद घोष के शिक्षा दर्शन की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, फिर भी व्यवहारिक स्तर पर इसके क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं—

- संसाधनों की कमी
- प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव
- ग्रामीण-शहरी असमानता
- तकनीकी अवसंरचना की कमी

इन चुनौतियों के बावजूद, यदि NEP 2020 को प्रभावी रूप से लागू किया जाए, तो यह शिक्षा प्रणाली को अधिक मानवीय और समावेशी बना सकती है।

### उपसंहार

शिक्षा दर्शन में अरविंद घोष का महत्वपूर्ण योगदान है । वह शिक्षा को उन्नति की ओर ले जाना चाहते थे क्योंकि उनका मानना था कि शिक्षा सिर्फ सूचनाओं को एकत्र करना नहीं है, इससे ज्ञान का आधार नहीं बनाया जा सकता है। शिक्षा से वह राष्ट्र की आत्मा, मानवता की आत्मा और मस्तिष्क से अपने जीवन दिमाग को जोड़ने में सक्षम होता है। । आध्यात्मिक विकास के लिए शारीरिक शुद्धि आवश्यक है। वर्षों बाद, वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर उनकी शिक्षा का असर स्पष्ट है। इसलिए हम कह सकते हैं कि उनके बहुत पहले से सुझाए गए शिक्षा के उद्देश्य आज की शिक्षा प्रणाली में विशेष रूप से अपनाए जाएंगे। देखते हुए, हम कह सकते हैं कि उनका भविष्य का विचार बहुत सही था। वर्तमान युग में हमारी शिक्षा प्रणाली को सुधारने के लिए महान विभूति द्वारा दिए गए शिक्षा के मूल्यों को अपनाने की बहुत जरूरत है। अरविंद घोष का सर्वांग शिक्षा दर्शन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। National Education Policy 2020 ने जिस समग्र, लचीली और मूल्य-आधारित शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना की है, वह काफी हद तक अरविंद घोष के विचारों से प्रेरित प्रतीत होती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि सर्वांग शिक्षा दर्शन, आधुनिक शिक्षा सुधारों के लिए एक मजबूत वैचारिक आधार प्रदान करता है और NEP 2020 के सफल क्रियान्वयन में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। अरविंद घोष का सर्वांग शिक्षा दर्शन शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि **मानव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास और आत्म-साक्षात्कार का साधन** मानता है। यह दर्शन आज के युग में भी अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि यह शिक्षा को जीवन से जोड़ता है और व्यक्ति को एक आदर्श नागरिक तथा आध्यात्मिक रूप से समृद्ध बनाता है।

## संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. अरबिंदो, एस. (1952). समग्र शिक्षा: श्री अरबिंदो और माँ के शब्दों में (आई. सेन, संकलक). पुडुचेरी, भारत: श्री अरबिंदो अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय केंद्र.
2. अरबिंदो, एस. (1960). शिक्षा पर श्री अरबिंदो और माँ. पुडुचेरी, भारत: श्री अरबिंदो अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा केंद्र.
3. अरबिंदो, एस. (1971). राष्ट्रीय शिक्षा की एक प्रणाली. कलकत्ता: आर्य पब्लिशिंग हाउस.
4. अरबिंदो, एस. (1985). द लाइफ डिवाइन (खंड 21–22). पुडुचेरी, भारत: श्री अरबिंदो आश्रम प्रकाशन विभाग.
5. अरबिंदो, एस. (1998). दर्शन और योग पर निबंध. पुडुचेरी, भारत: श्री अरबिंदो आश्रम प्रकाशन विभाग.
6. मुखर्जी, जे. के. (2000). समग्र शिक्षा के सिद्धांत और लक्ष्य. पुडुचेरी, भारत: श्री अरबिंदो आश्रम.
7. पाणि, आर. एन. (2001). समग्र शिक्षा: विचार और व्यवहार. नई दिल्ली: APH पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन.
8. श्री अरबिंदो आश्रम. (2007). शिक्षा के प्रति एक नया दृष्टिकोण. पुडुचेरी, भारत: लेखक.
9. जोशी, के. (2018). चरित्र विकास और समग्र विकास के लिए शिक्षा. नई दिल्ली: NCERT.
10. शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। नई दिल्ली: भारत सरकार।
11. भारत सरकार। (2021)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: कार्यान्वयन रणनीतियाँ। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
12. कुमार, के. (2023)। शिक्षा, नीति और व्यवहार: NEP 2020 पर चिंतन। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।
13. कॉर्नेलिसन, एम. (2024). भारतीय मनोविज्ञान और समग्र शिक्षा की नींव. पुडुचेरी: भारतीय मनोविज्ञान संस्थान.
14. अयंगर, के. आर. एस. (2025). श्री अरबिंदो: एक जीवनी और एक इतिहास. पुडुचेरी: श्री अरबिंदो अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा केंद्र.